नामांक Roll No.

No. of Questions — 3

No. of Printed Pages — 7

SS—34–1—T.W. (Hindi)

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2011

वैकल्पिक वर्ग III - वाणिज्य (OPTIONAL GROUP III — COMMERCE)

हिन्दी टंकण लिपि

(TYPEWRITING IN HINDI)

समय — 1 घण्टा

पूर्णांक — 60

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें ।
2. प्रत्येक कागज की एक तरफ टंकण करें ।
3. प्रत्येक प्रश्न को नये पृष्ठ से आरम्भ करना है ।
4. प्रत्येक लाइन के बीच में द्विगुणित अवकाश (Double Spacing) देकर टंकण करना है ।

1. निम्नलिखित अवतरण को टंकित कीजिए :

अंक

टंकण — 28

सजावट — 2

कुल — 30

सत्य की खोज

धर्म या सत्य की खोज आध्यात्मिक आवश्यकता है । ब्रह्माण्ड की प्रक्रिया पर दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि एक वस्तु के बाद दूसरी वस्तु अस्तित्व में आ रही है या एक घटना के बाद दूसरी घटना घट रही है । महान सभ्यताओं, कला के महान प्रतीकों तथा अन्य महान वस्तुओं का उदय होता है, विकास होता है और फिर अन्त हो जाता है और हम यह प्रश्न करते हैं, ''क्या अन्त होना ही सब कुछ है या कुछ ऐसा भी है जिसका अन्त नहीं होता ?'' सतत् परिवर्तन की इस प्रक्रिया में क्या कुछ ऐसा भी है जिसे अपरिवर्तनीय माना जा सकता है ? यह ऐसा प्रश्न है जिसे हर प्रबुद्ध व्यक्ति अवश्य ही उठाता है । वह यह नहीं सोच सकता कि मात्र विनाश ही सम्पूर्ण अस्तित्व का अंत है और ब्रह्माण्ड की प्रक्रिया का उदय होता है और अवसान हो जाता है । यह प्रश्न अवश्य ही उठता है और यही कारण है कि सत्य के महान खोजी यह प्रश्न करते हैं ।

उपनिषद् के ऋषि ने कहा है, 'मुझे असत्य से सत्य, अंधकार से प्रकाश और मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चल ।' दूसरे शब्दों में उस ऋषि की यह अनुभूति है कि जिस विश्व में हम रह रहे हैं, वह असत्य, अन्धकार और मृत्यु वाला विश्व है; किन्तु वह यह विश्वास नहीं करना चाहता कि अन्धकार, मृत्यु और असत्य ही अस्तित्व या जीवन का अन्त है । वह किसी ऐसी वस्तु की आवश्यकता महसूस करता है जो इन बातों से परे ही है । अत: यह प्रार्थना करता है, 'मुझे उस ओर ले चल ।'

इसी प्रकार महात्मा बुद्ध ने प्रश्न किया, 'बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु ही सब कुछ है या इनके परे भी कुछ है ? क्या मनुष्य बुढ़ापे, बीमारी और मृत्यु के लक्षण वाले समय के प्रभुत्व से स्वयं को मुक्त कर सकता है या विनाश ही परम सत्य है ?'

इसी प्रकार ईसाई धर्मोपदेश के अनुसार 'मृत्यु सब कुछ का अन्त नहीं है । आखिरी जीत कब्र की नहीं होगी ।' ईसाई धर्म सूली पर लटके ईसा को अन्तिम सत्य नहीं मानता, वह कहता है, वह (ईसा) उठ खड़ा हुआ है । इसका मतलब यह है कि कुछ ऐसा है जो मृत्यु के बाद जीवित रहता है । विनाश जिसका अन्त है, यदि ऐसा जीवन ही सब कुछ होता तो संसार का कोई भी मनुष्य ऐसे जीवन से सन्तुष्ट न होता । यदि समय ही सब कुछ है यानि सब कुछ को समय निगल जाता है और ऐसा कुछ भी नहीं है जो समय से बच जाए – यानि यदि शाश्वत या सनातन कुछ भी नहीं तो जीवन का कोई भी अर्थ नहीं रह जाता है ।

यदि जीवन का महत्व है, यदि इसका कोई अर्थ है, यदि इसका कोई उद्देश्य है तो हमारे पास कोई ऐसी वस्तु होनी चाहिए जो कालजयी या समय को लाँघने वाली हो, जो हमें यह महसूस कराए कि हम सबमें कोई अमर तत्त्व है । यदि यह ब्रह्माण्ड की प्रक्रिया ही सब कुछ है या यह अस्तित्व ही सब कुछ है तो वास्तविकता या सत्य क्या है ? इसका यह उत्तर है कि परमेश्वर ही सत्य है, क्योंकि यदि परमेश्वर न होता तो अस्तित्व भी संभव नहीं होता ।

क्या वह परमशक्ति, बुद्धिहीन या निष्क्रिय है ? नहीं । विश्व में जो भी व्यवस्था या नियम तथा प्रगति आप पाते हैं, वह इस बात का द्योतक है कि इस सबमें बुद्धि का उपयोग हुआ है और इस सबका कोई प्रयोजन है । जिस परमेश्वर को आप अनंत और अन्तहीन मानते हैं, क्या यह विश्व ही उसका संभावित प्रकट रूप है ? क्या वह इस संभावना को प्रकट करने के लिए बाध्य है या इसके चयन के लिए वह स्वाधीन है ? अत: हम इसे स्वाधीनता कहते हैं । आप इसे सच्चिदानन्द कह सकते हैं या प्रकृति, बुद्धि और स्वाधीनता कह सकते हैं ।

2. निम्नलिखित पत्र को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :

अंक

टंकण — 12

सजावट — 3

कुल — 15

सर्वोदय ट्रेडिंग कारपोरेशन

कपड़े के थोक व्यापारी एवं कमीशन एजेन्ट

तार का पता —'सर्वोदय'

टेलीफोन सं० — 0151/331666

पत्र सं० — 575

एस–1, प्रतिभा टावर,

चांदनी चौक,

सूरत — 5

दिनांक — 10 नवम्बर,, 2010

मेसर्स रीनू एन्टरप्राईजेज,

भगत सिंह मार्ग,

शिवपुरी (मध्य प्रदेश)

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनांक 03 नवम्बर, 2010 को प्राप्त हुआ । आपने अपने पत्र के माध्यम से उधार माल खरीदने की इच्छा जताई है, साथ ही व्यापारिक शर्तों के बारे में भी जानकारी चाही है ।

इस संदर्भ में हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि हम सामान्यत: नकद में ही लेनदेन करते हैं, केवल हमारे स्थायी ग्राहकों को ही उधार की सुविधा देते हैं ।

चूंकि आपसे हमारा पूर्व में किसी प्रकार का लेनदेन नहीं हुआ है, अत: हम आपको उधार पर माल बेचने में असमर्थ हैं । यदि आप हमारे से उधार पर लेनदेन करना चाहते हैं तो आप अपने बैंक का नाम एवं खाता संख्या, साथ ही दो व्यापारिक फार्मों का नाम जिनसे आपका लेनदेन रहा है भिजवाने का श्रम करें, ताकि उनसे आपकी आर्थिक स्थिति के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सकें ।

आपके बैंक एवं व्यापारिक फर्मों से आवश्यक जानकारी लेने के बाद ही आपको उधार की सुविधा का निर्णय लेना संभव हो सकेगा ।

आपके शुभेच्छु,

सही

(एस० बी० जाखड़)

प्रबन्धक

3. निम्नलिखित सारणी को यथोचित रूप देकर टंकित कीजिए :

अंक

टंकण — 12

सजावट — 3

कुल — 15

भारतीय स्टेट बैंक

शेयर कीमत में उतार चढ़ाव बी एस ई सेंसेक्स / एन एस ई निफ्टी

(बाजार भाव आंकड़े रु० में)

क्र० सं०	मास	बी एस ई में भारतीय स्टेट बैंक के शेयर का भाव (रु०)		एन एस ई निफ्टी	
		उच्चतम	न्यूनतम	उच्चतम	न्यूनतम
1.	अप्रेल-09	1355	1023	3517	2965
2.	मई-09	1892	1219	4509	3478
3.	जून-09	2039	1598	4693	4143
4.	जुलाई-09	1839	1510	4669	3918
5.	अगस्त-09	1888	1670	4743	4353
6.	सितम्बर-09	2219	1715	5087	4576
7.	अक्टूबर-09	2500	2047	5181	4687
8.	नवम्बर-09	2384	2057	5138	4538
9.	दिसम्बर-09	2375	2125	5221	4942
10.	जनवरी-10	2315	1955	5310	4766